

---

Shri Vinayaka Stavaraja

श्रीविनायकस्तवराजः

Document Information

---

Text title : Vinayaka Stavaraja

File name : vinAyakastavarAjaH.itx

Category : ganesha, stavarAja

Location : doc\_ganesha

Proofread by : Sreenivasa Rao Bhagavatula

Description-comments : From stotrArNavaH 01-07

Latest update : February 13, 2021

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 13, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

---

# Shri Vinayaka Stavaraja

---

## श्रीविनायकस्तवराजः

---



भीजापूरगढेक्षुकार्मुक रुजा यकाञ्जपाशोत्पल-

त्रीड्यग्रस्वविषाणारत्नकलशप्रोद्यत्तराम्भोरुडः ।

ध्येयो वल्लभया सपद्मकरयाश्विष्टोज्ज्वलद्भषया

विश्रोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश षष्टार्थदः ॥ १ ॥ (विघ्नोविशिशार्थदः)

नमस्ते सिद्धिलक्ष्मीश गणेशिप मडाप्रभो ।

विघ्नेश्वर जगन्नाथ गौरीपुत्र जगत्प्रभो ॥ २ ॥

जय विघ्नेश्वर विभो विनायक मडेश्वर ।

लम्बोदर मडाभाडो सर्वदा त्वं प्रसीद मे ॥ ३ ॥

मडादेव जगत्स्वामिन् मूषिकारूढ शङ्कर ।

विशालाक्ष मडाकाय मां त्राडि परमेश्वर ॥ ४ ॥

कुञ्जरास्य सुराधीश मडेश करुणानिधे ।

दशभाडो मडाराज मडावक्त्र यतुर्भुज ॥ ५ ॥

शूर्पकर्ण मडाकर्ण गणनाथ प्रसीद मे ।

मातुलुङ्गाधर स्वामिन् गदायुक्कसमन्वित ॥ ६ ॥

शङ्भूलसमायुक्त भीजापूरसमन्वित ।

षष्कार्मुकसंयुक्त पद्मदस्त प्रसीद मे ॥ ७ ॥

नानाभरणसंयुक्त रत्नकुम्भकर प्रभो ।

सर्गस्थितिलयाधीश परमात्मन् जय प्रभो ॥ ८ ॥

अनाथनाथ विश्वेश विघ्नसङ्घविनाशन ।

त्रयीमूर्ते सुरपते ब्रह्मविष्णुशिवात्मक ॥ ९ ॥

त्रयीगुण मडादेव पाडि मां सर्वपालक ।

अणिमादिगुणाधार लक्ष्मीभूविष्णुपूजित ॥ १० ॥

गौरीशङ्करसम्पूज्य जय त्वं गणनायक ।  
 रतिमन्मथसंसेव्य मलीभूदारसंस्तुत ॥ ११ ॥  
 सिद्ध्याऋद्ध्यामोदादिसंसेव्य मडागणपते जय ।  
 शङ्भपद्मादिसंसेव्य निरालम्ब निरीश्वर ॥ १२ ॥  
 निष्कलङ्क निराधार पाछि मां नित्यमव्यय ।  
 अनाद्य जगतामाद्य पितामहसुपूजित ॥ १३ ॥  
 धूमकेतो गण्णाध्यक्ष मडामूषकवाहन ।  
 अनन्तपरमानन्द जय विघ्नेश्वरेश्वर ॥ १४ ॥  
 रत्नसिंहासनासीन डिरीटेन सुशोभित ।  
 परात्पर परेशान परपूरुष पाछि माम् ॥ १५ ॥  
 निर्द्वन्द्व निर्गुणाभास जपापुष्पसमप्रभ ।  
 सर्वप्रमथसंस्तुत्य त्राछि मां विघ्ननायक ॥ १६ ॥ (सर्वप्रथम्)  
 कुमारस्य गुरो देव सर्वेश्वर्यप्रदायक ।  
 सर्वाभीष्टप्रद स्वामिन् सर्वप्रत्यूढनाशक ॥ १७ ॥  
 शरण्य सर्वलोकानां शरणागतवत्सल ।  
 मडागणपते नित्यं मां पालय कृपानिधे ॥ १८ ॥  
 अेवं श्रीगणनाथस्य स्तवराजमनुत्तमम् ।  
 यः पठेच्छृणुयान्नित्यं प्रत्यूढैः स विमुच्यते ॥ १९ ॥  
 अश्वमेधसमं पुण्यकृत्वं प्राप्नोत्यनुत्तमम् ।  
 वशीकरोति त्रैलोक्यं प्राप्य सौभाग्यमुत्तमम् ॥ २० ॥  
 रमते देवकन्याभिः स नित्यं साधकोत्तमः ।  
 सर्वान् भोगान् प्रभुङ्क्तेऽसौ दुर्लभांश्च दिने दिने ॥ २१ ॥  
 सर्वाभीष्टमवाप्नोति शीघ्रमेव सुदुर्लभम् ।  
 मडागणेशसान्निध्यं प्राप्नोत्येव न संशयः ॥ २२ ॥  
 ॥ इति श्रीरुद्रयामले श्रीविनायकस्तवराजः सम्पूर्णाः ॥

Proofread by Sreenivasa Rao Bhagavatula

*Shri Vinayaka Stavaraja*

pdf was typeset on February 13, 2021

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

